धार्मिक उत्सव एवं व्रतों का अध्यात्मशास्त्रीय आधार

भूमिका

'धार्मिक उत्सव और व्रत', हिन्दुओंके धर्मजीवनके अविभाज्य अंग हैं । मनुष्य स्वभावतः उत्सवप्रिय होता है । इसलिए, हिन्दूजन देवताओंकी जन्मतिथि संतोंकी पुण्यतिथिके साथ ही, कोजागरी पूर्णिमा, दीपावली, होली आदि त्यौहार मिल-जुलकर पूरे उत्साहके साथ मनाते हैं । ऐसे धार्मिक उत्सवोंसे उनकी समाजाभिमुखता बढती है और सामाजिक एकता दृढ होती है; परंतु इस सबके साथ यह देखना आवश्यक होता है कि इन धार्मिक उत्सवोंसे समाजको आध्यात्मिक स्तरपर लाभ मिल रहा है अथवा नहीं; क्योंकि, यही उत्सव मनानेका मूल उद्देश्य है । इसके लिए धर्मशास्त्रका ज्ञान प्राप्त करना और वर्तमानमें धार्मिक उत्सवोंको प्राप्त विकृत रूप परिवर्तित कर धर्मशास्त्रानुसार उत्सव मनाना, यह 'हिन्दू'के रूपमें हमारा कर्तव्य है । इस दृष्टिसे विविध धार्मिक उत्सव मनानेकी धर्मशास्त्रीय पद्धतियां इस ग्रंथमें दी हैं ।

मनुष्यका जीवन संयमित और सुखी बनानेके लिए उपयुक्त व्रत हिन्दू धर्ममें बताए गए हैं । इन व्रतोंके पीछे ऋषि-मुनियोंका संकल्प भी है, इसलिए इनका श्रद्धापूर्वक पालन करनेवालोंको व्रतोंका इष्ट फल मिलता है । इस ग्रंथमें विविध व्रत करनेकी शास्त्रीय पद्धतियों का विवेचन भी दिया हैं ।

'ग्रंथ पढकर पाठकोंको उत्सव एवं व्रतों से जीवनमें मांगल्य अनुभव हो', यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना ! - **संकलनकर्ता**

टिप्पणी - वर्षके प्रमुख त्यौहार, धार्मिक उत्सव एवं व्रतों की सूची सनातनके ग्रंथ 'उत्सव मनानेकी उचित पद्धतियां और अध्यात्मशास्त्र' में दिया है ।

'सनातन'के ग्रंथ 'ऑनलाइन' क्रय हेतु उपलब्ध -
www.SanatanShop.com

अध्याय २

धार्मिक उत्सव

अनुक्रमणिका

१. **व्याख्या** २१

२. **उद्देश्य** २१

३. **इतिहास** २२

४. **कुछ प्रमुख धार्मिक उत्सव** २२

४ अ. श्रीराम नवमी २२

४ आ. हनुमान जयंती २४

४ इ. वटसावित्री २५

४ ई. गुरुपूर्णिमा (व्यासपूजा) २५

४ उ. पोला (बैलोंका त्यौहार – बेंदुर अथवा बेंडर) २७

४ ऊ. मंगलागौरी २७

४ ए. जन्माष्टमी (गोकुलाष्टमी) २७

४ ऐ. श्री गणेश चतुर्थी (श्री गणेशोत्सव) ३१

४ ओ. नवरात्रि ३१

४ औ. दुर्गाष्टमी ३१

४ अं. दशहरा (विजयादशमी) ३२

४ क. कोजागरी पूर्णिमा (शरद, नवान्न पूर्णिमा) ३२

४ ख. लक्ष्मीपूजन (दीवाली) ३३

४ ग. शाकंभरी पूर्णिमा ३३

४ घ. वसंत पंचमी ३४

४ च. होली ३४

४ छ. धूलिवंदन ३८

४ ज. रंगपंचमी ३९

अध्याय ३

व्रत

अनुक्रमणिका

१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ ४२
२. इतिहास एवं निर्मिति ४२
३. व्रतसंख्या ४३
४. ग्रंथ ४३
५. महत्त्व एवं लाभ ४४
६. प्रकार ४६
७. व्रतीद्वारा पालन हेतु नियम (व्रतपरिभाषा) ४९
८. व्रताधिकारी ५२
९. कौनसे व्रत किसलिए ? ५३
१०. उपवाससंबंधी व्रत ५३
११. पूर्वतैयारी ५५
१२. व्रतविधान ५५
१३. प्रतिनिधि ५७
१४. व्रतका फल किसपर निर्भर होता है ? ५७
१५. स्त्रियां एवं व्रत ५८
१६. रोग एवं व्रत ५९
१७. कुछ प्रमुख व्रत ५९
१७ अ. एकादशी (हरिदिनी) ५९
१७ आ. गणगौर तीज ६०
१७ इ. निर्जला एकादशी (भीमसेनी एकादशी) ६१
१७ ई. आषाढी एकादशी ६१
१७ उ. प्रदोष व्रत ६२
१७ ऊ. वटसावित्री ६३

१७ ए. चातुर्मास्य (चातुर्मास) ६५

१७ ऐ. श्रावणी सोमवार एवं शिवमुष्टिव्रत ६८

१७ ओ. मंगलागौरी ६८

१७ औ. जरा-जीवंतिका पूजन ६८

१७ अं. हरियाली (पिठोरी अमावस्या, दीपपूजा) ६९

१७ क. हरितालिका ६९

१७ ख. श्री गणेश चतुर्थी (श्री सिद्धिविनायक व्रत) ६९

१७ ग. ऋषिपंचमी ६९

१७ घ. ज्येष्ठा गौरी ७०

१७ च. अनंत चतुर्दशी ७१

१७ छ. पितृपक्ष (महालय पक्ष) ७२

१७ ज. अविधवा नवमी ७३

१७ झ. पोला (बैलोंका त्यौहार) ७४

१७ ट. नवरात्रि ७४

१७ ठ. करवाचौथ ७७

१७ ड. वसुबारस (गोवत्स द्वादशी) ७७

१७ ढ. छठ पूजा १७ त. कार्तिक एकादशी ७७

१७ थ. महाशिवरात्रि ७८

सनातनकी दृश्यश्रव्य-चक्रिका (वीडियो सीडी)

व्रतोंकी पूर्वतैयारी, चातुर्मास व श्रावणके त्यौहार व व्रत

- नागपंचमी, नारियल पूर्णिमा एवं रक्षाबंधन
- दीपपूजन, जिवंतिका पूजन, शिवामूठ, श्रावणी सोमवार एवं गोकुलाष्टमी व्रत

इनका धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण समझ लें !